DOI-10.53571/NJESR.2022.4.10.24-31

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक चिन्ता, अध्ययन की आदत और भावनात्मक सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन।

डॉ० आनन्द किशोर
प्राचार्य
मैक्स इंस्टिट्यूट ऑफ टीचर्स ट्रेनिंग, बिजुलिया, रामगढ़, झारखण्ड, पिन कोड– 829122

(Received: 16 September 2022/ Revised: 1 October 2022/Accepted: 10 October 2022/Published: 20 October 2022)

सारांश :–

किसी काम में असफल हो जाना चिन्ता है। छात्रों में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं शिक्षागत समस्या सामने उपस्थित रहती है। जो समस्या का समाधान उसी समय करते हैं। इससे उन्हें सुख की प्राप्ति होती है। जो समस्या का समाधान नहीं कर पाते वे उसी समय दुखी हो जाते हैं। समस्या का समाधान नहीं कर पाना ही शैक्षणिक चिन्ता है। जब शिक्षक से छात्र स्नेह चाहता है तो नहीं मिलता बल्कि उसे प्रताड़ना मिलती है। जिससे बालक हतोत्साहित हो जाता है।

प्रस्तावना :– शिक्षार्थी पाठ्यवस्तु भली–भांति ग्रहण करके उचित पथ पर अग्रसर हो सकता है। जबकि अच्छी पाठ्यवस्तु के माध्यम से शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

शैक्षणिक चिन्ता :– छात्रों को शैक्षणिक समस्या का समाधान नहीं होता है तो उनका मानसिक तनाव बढ़ जाता है। मानसिक तनाव होने से विद्यार्थी ठीक ढंग से कार्य सम्पन्न नहीं कर पाता है, जिससे वह असफल हो जाता है। असफल होने से उनकी शैक्षणिक चिन्ता बढ़ जाती है।

अध्ययन की आदत :– यह एक प्रकार की योजना है जिसमें समय सारणी,

प्रतिदिन छात्रो द्वारा अध्ययन, अनुशाासन में पढ़ना, नोट करना, शिक्षक से अध्ययन संबंधित समस्याओं को पूछना, सभी विषयों को समान महत्व देना, कठिन विषयों को अधिक महत्व देना, ठीक ढंग से पुनरावृति करना, परीक्षा से भय उत्पन्न नहीं होना और अध्ययन के प्रति सकारात्मक सोच होना अध्ययन की आदत कहलाता है।

भावनात्मक और सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन :– परिपक्वता एक विकासात्मक प्रक्रिया है। यह परिपक्वता हर व्यक्ति को समान जीवन जीने की कला सिखाती है। हर व्यक्ति के पास कुछ सामाजिक एवं भावनात्मक गुण होना चाहिए। जैसे– स्नेह, सम्मान तथा मेत्रीभाव होना चाहिए लेकिन जिस छात्र के पास ये गुण नहीं होते वे भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता को प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

सामाजिक जीवन ठीक नीति नियम से चलना, लोगों के साथ सम्पर्क रखना, सहयोग करना, सामाजिक रीति–रिवाजों को मांगना नैतिक विचार रखना, समूह कार्य में शामिल होना, हर परिस्थिति में सामंजस्य स्थापित करना।

उद्देश्य :–

1. सभी विद्यार्थी की शैक्षणिक परिपक्वता ज्ञात करना।
2. प्राईवेट एवं सरकारी विद्यालयों के छात्रों का शैक्षणिक परिपक्वता ज्ञात करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों का शैक्षणिक परिपक्वता ज्ञात करना।
4. लड़का एवं लड़कियों का शैक्षणिक परिपक्वता ज्ञात करना।
5. सभी छात्रों का अध्ययन की आदतों का स्तर ज्ञात करना।
6. लड़के एवं लड़कियों के अध्ययन की आदत को ज्ञात करना।
7. भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता से संबंधित छात्रों के स्तर को ज्ञात करना।
8. सरकारी एवं प्राईवेट विद्यालयों की छात्रों का भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता ज्ञात करना।

सहसंबंध :–

1. शैक्षणिक परिपक्वता एवं अध्ययन की आदत में संबंध है।
2. अध्ययन की आदत, भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता में संबंध है।

3.भावनात्मक एवं शैक्षणिक परिपक्वता में संबंध है।

परिकल्पना – शून्य परिकल्पना :–

1. हर छात्र की शैक्षणिक परिपक्वता का स्तर समान है।
2. प्राईवेट एवं सरकारी शैक्षणिक परिपक्वता में कुछ अन्तर नहीं है।
3. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षणिक परिपक्वता में कोई अन्तर नहीं है।
4. लड़के एवं लड़कियों की शैक्षणिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं है।
5. हर छात्र की अध्ययन की आदत समान है।
6. प्राईवेट एवं सरकारी छात्रों के अध्ययन की आदत में कोई अंतर नहीं है।
7. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के अध्ययन की आदत में कोई अंतर नहीं है।
8. लड़के एवं लड़कियों के अध्ययन की आदत में कोई अंतर नहीं है।
9. भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता का स्तर समान है।
10. प्राईवेट एवं सरकारी छात्रों के भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता में अंतर नहीं है।
11. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता में अंतर नहीं है।
12. लड़के एवं लड़कियों के भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता में अंतर नहीं है।
13. शैक्षणिक परिपक्वता एवं अध्ययन की आदत में कोई संबंध नहीं है।
14. अध्ययन की आदत एवं भावनात्मक तथा सामाजिक परिपक्वता में कोई संबंध नहीं है।
15. भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता तथा शैक्षणिक परिपक्वता में कोई संबंध नहीं है।

परिकल्पना दो प्रकार के हैं :–

निर्देशात्मक परिकल्पना तथा शून्य परिकल्पना।

शिक्षा के तीन स्तर हैं :–

1. प्राथमिक
2. माध्यमिक
3. उच्च स्तरीय।

माध्यमिक स्तर छात्रों के सर्वांगीण विकास जैसे शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक विकास तथा सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। माध्यमिक स्तर में छात्र एवं छात्राओं के बीच बहुत प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इस समस्या का समाधान करना एक प्रमुख दायित्व है। माता–पिता तथा शिक्षक को सही भूमिका निभानी चाहिए। शिक्षक को छात्रों का तनाव कम करना चाहिए। इनका भावनात्मक परिपक्वता बढ़ाना चाहिए और अच्छा अध्ययन प्रयास करना चाहिए। तीनों काम करने के पहले छात्रों के तनाव तथा परिपक्वता का स्तर मापना चाहिए।

वर्तमान का अन्वेषण छात्र–छात्राओं का शैक्षणिक परिपक्वता, अध्ययन की आदत, भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता के उपर निर्भर करता है। छात्र–छात्राओं को एक अच्छा नागरिक बनाने के लिए अन्वेषण बहुत ही जरूरी है।

सीमा :–

1. यह उद्देश्यपूर्ण नमूना लिया गया है।
2. कक्षा 9 के छात्रों को चुना गया है।
3. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों को चुना गया है।
4. सरकारी एवं गैर सरकारी छात्रों को चुना गया है।
5. लड़के एवं लड़कियों को चुना गया है।
6. सह शिक्षा विद्यालयों को चुना गया है।

न्यादर्श :– इसमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग हुआ है। यह वर्तमान में होने वाली शोध संबंधित घटनाओं एवं परिस्थितियों से संबंधित है। अतः इसका स्वरूप अधिक व्यापक है।

उपकरण :–

1. शैक्षणिक चिन्ता मापनी
2. अध्ययन की आदत संबंधित मापनी
3. भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता के लिए एक व्यापक मापनी

1. शैक्षणिक चिन्ता मापनी :– यह मापनी डॉ० एस०के० पाल, डॉ० के०एस० मिश्रा एवं डॉ० के० पाण्डेय द्वारा तैयार किया गया है इसका उद्देश्य यह है कि छात्र असफल क्यों होते हैं और असफलता से भयभीत क्यों होते हैं

इसमें तीन क्षेत्रों का समावेश है। i) मनोवैज्ञानिक, ii) सामाजिक, iii) शिक्षागत समस्या। इसमें 35 तथ्य हैं। इसमें हाँ या नहीं दो विकल्प दिये जाते हैं। हाँ के लिए 1 एवं नहीं के लिए 0

कुल अंक – 35

कुल प्रश्न – 35

जिसका अंक ज्यादा होगा समस्या ज्यादा होगी, जिसका अंक कम होगा समस्या कम होगी, जिसका अंक 0 होगा उसकी समस्या नहीं होगी।

2. अध्ययन की आदत संबंधित मापनी :– इस टेस्ट को डॉ० बी० बी० पटेल ने तैयार किया। इसमें 7 क्षेत्र हैं। घर का वातावरण, पढ़ना और लिखना, विषय की योजना, बैठने की आदत डालना, परीक्षा की तैयारी करना, मनोवृति और विद्यालयी वातावरण। इसी मापनी में 45 तथ्य हैं। एक तथ्य में 5 विकल्प दिये गये हैं। i) कभी नहीं, ii) यदा–कदा, iii) कभी–कभी, iv) अधिकतर, v) हमेशा

199–225 बहुत अच्छी अध्ययन आदत

189–198 अच्छी अध्ययन आदत

160–179 संतोषजनक अध्ययन आदत

140–159 कमजोर अध्ययन आदत

45–139 बहुत कमजोर अध्ययन आदत

3. भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता के लिए एक व्यापक मापनी :– यह टेस्ट डॉ० रमापाल ने प्रतिपादित किया। इसका उद्देश्य यह है कि व्यक्ति कितना सामाजिक परिपक्वता हासिल किया। इसमें 7 क्षेत्र हैं। i) स्वास्थ्य, ii) मौलिक नियंत्रण, iii) घर के सदस्य की योग्यता, iv) वृत्ति, v) नागरिकता, vi) मध्यावकाश का व्यवहार, vii) नैतिक चरित्र। इस टेस्ट 50 प्रश्न हैं 1 प्रश्न का 4 विकल्प है।

i) पूर्ण सहमत के लिए –4, ii) सहमत के लिए –3, iii) असहमत के लिए –2, iv) पूर्ण असहमत के लिए –1

अधिकत्तम प्राप्तांक– 200 और न्यूनतम–50

149–200 – अधितम सामाजिक परिपक्वता

106–148 – सामान्य परिपक्वता

85–105 – औसत परिपक्वता

61–84 – कम सामाजिक परिपक्वता

60 और उससे नीचे – बहुत कम सामाजिक परिपवक्ता,

इसमें स्थायी माप को प्रतिशतता में बदला।

आँकड़ा संग्रह :– मैं सर्वप्रथम प्रधानाध्यापक के पास गया। 20 स्कूल के प्रधानाध्यापक से बात की तथा उनसे अनुमति ली। इसके बाद कक्षा 9 के 3 छात्रों से मिला और एक विद्यालय में एक दिन में 1 टेस्ट किया। पहले दिन शैक्षणिक चिन्ता, दूसरे दिन अध्ययन की आदत और तीसरे दिन भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता का टेस्ट किया। इसके बाद आँकड़ा संग्रह किया, आँकड़ा संग्रह करने में मुझे 4 महीने का समय लगा। आँकड़ा संग्रह करने के बाद प्राप्तांक चढ़ाया, प्राप्तांकों को प्रतिशतता में बदला।

सांख्यिकीय विश्लेषण :– स्थायी मान को प्रतिशतता में बदला

$$\text{Mean} = \text{AM} + \frac{\sum fd}{N} \text{x } i$$

$$\text{S}_\text{D} = \frac{i}{N}\sqrt{Ncfd^2 - (\sum fd)^2}$$

$$\text{t} = \frac{|M_1 - M_2|}{\frac{(q_1)^2}{n_1} + \frac{(q_2)^2}{n_2}}$$

$$\text{Correlation . r} = \frac{N\sum xy - \sum\times\sum.}{\sqrt{(N\sum x^2 - (\sum x)^2\ (N\sum y^2 - (\sum y)^2}}$$

आँकड़ा प्रस्तुतीकरण :– चर का प्रयोग किया। तीन चर निम्नलिखित हैं :–

1. शैक्षणिक चिन्ता
2. अध्ययन की आदत
3. भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन

तीनों टेस्ट छात्रों पर करने के बाद जो आंकड़ा मिला उसको हमने दंड–आरेख के माध्यम से उपस्थित किया।

निष्कर्ष :–

1. 16 प्रतिशत न्यूनतम शैक्षणिक चिन्ता 60 प्रतिशत औसत चिन्ता, 24 प्रतिशत उच्च शैक्षणिक चिन्ता।
2. प्राईवेट एवं सरकारी विद्यार्थी का शैक्षणिक चिन्ता समान है।
3. शहरी क्षेत्रों का शैक्षणिक चिन्ता ग्रामीण छात्रों के शैक्षणिक चिन्ता से कम है।
4. लड़के एवं लड़कियों का शैक्षणिक चिन्ता समान है।
5. 10%, 14%, 46%, 20% और 10% विद्यार्थी बहुत अच्छे, संतोषजनक, कमजोर और बहुत कमजोर अध्ययन आदत के अंतर्गत पाया गया।
6. सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी का अध्ययन आदत प्राईवेट स्कूल के विद्यार्थी से अधिक शहरी विद्यार्थी का अध्ययन आदत ग्रामीण विद्यार्थी के अध्ययन आदत से अधिक लड़के एवं लड़कियों का अध्ययन आदत एक समान रहता है।
7. 12%, 20%, 42%, 18% और 8% विद्यार्थी का भावनात्मक एवं सामाजिक परिपक्वता का सबसे अधिक 20% अधिक, 42% औसत, 18% असमान (अपरिपक्व) और 8% अधिकत्तम अपरिपक्व पाया गया। ।
8. सरकारी एवं प्राईवेट विद्यालयों के छात्रों के भावनात्मक एवं सामाजिक परिवक्ता में समानता है।
9. ग्रामीण एवं शहरी में सामाजिक परिपक्वता समान है।
10. लड़कों एवं लड़कियों में सामाजिक परिपक्वता समान है।

सुझाव :–

1. प्राथमिक और कॉलेज स्तर पर तीनों चरों को लेकर अध्ययन करना चाहिए।
2. यादृच्छिक नमूना में अध्ययन करना चाहिए।

अनुमोदन :–

1. शिक्षक और माता–पिता को चाहिए कि वे लड़के एवं लड़कियों का शैक्षणिक चिन्ता कम करें।
2. ग्रामीण छात्रों को ज्यादा सुविधा देनी चाहिए जिससे उनका अध्ययन की आदत बढ़ सके।
3. विद्यालय में छात्रों के लिए खेलकूद की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे शैक्षणिक चिन्ता कम हो जाए।

संदर्भ–सूची :–

1. जोशी, मंजू
2. अविस्थापन मन
3. वर्मा सरोज और कुमार
4. वानी गुलशन
5. अग्रवाल, एम0
6. चौहान, वी०एल० और भटनागर, टी.
7. गुप्ता, बीरा
8. एडम्स, हेनरी